IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: जनजातीय समुदायों के पारंपरिक ज्ञान पद्धतियों के संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में एक प्रयास

Dr. Sanjay Kumar, Prof. (Dr.) Manoj K. Saxena
Post Doctoral Fellow, Dean, Professor
Indian Council of Social Science Research
Central University of Himachal Pradesh

एक विस्तृत नीति दस्तावेज राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 जो अगले कुछ दशकों के लिए भारत में शिक्षा की रूपरेखा और दिशा प्रदान करेगी | नयी निति का निर्माण व्यापक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किया गया है | राष्ट्रीय शैक्षिक नीति 2020, बच्चे के संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक और शारिरिक कौशल के विकास पर ध्यान देने के साथ प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा की आवश्यकता पर जोर देती है। साथ ही साथ निति भारतीय परम्परागत धरोहर के सरंक्षण एवं संबर्धन की पक्षधर है | इस कार्य के निष्पादन हेतु वर्तमान शिक्षा निति में व्यापक बदलाव की आवश्यकता प्रतीत होती है | वर्तमान शोध पपत्र में राष्ट्रिय शिक्षा निति में परम्परागत सांस्कृतिक धरोहर के पक्ष में कथित सुझावों को अम्ल में लाने के तरीके पर बल दिया गया है | भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 आदिवासी भाषाओं और परंपराओं को संरक्षित करने और बढ़ावा देने को महत्त्व दे रही है। निति आलेख के अनुसार, भारत में भाषाओं और संस्कृतियों की विविधता भारत की एक ताकत है और इसे संरक्षित और पोषित किया जाना चाहिए। शिक्षा के माध्यम से इन भाषाओँ एवं परम्पराओ के सरंक्षण एवं संवर्धन हेतु प्रयास करने पर बल भी दिया गया है |

कूट शब्द: राष्ट्रिय शिक्षा निति, संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक और शारिरिक कौशल के विकास , परम्परागत सांस्कृतिक धरोहर

शोध पत्र

एक विस्तृत नीति दस्तावेज राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 जो अगले कुछ दशकों के लिए भारत में शिक्षा की रूपरेखा और दिशा प्रदान करेगा , 29 जुलाई, 2020 को भारत के केंद्रीय मंत्रिमंडल ने समाज की मांगों के अनुरूप शिक्षा प्रणाली में सुधार की दृष्टि से इस दस्तावेज़ को मंजूरी दी। वर्ष 1986 के 34 साल के अंतराल के बाद शिक्षा के क्षेत्र में यह पहली व्यापक नीति है। शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति 2020 निम्नलिखित प्रमुख विशेषताओं पर केंद्रित है:

1. प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई): राष्ट्रीय शैक्षिक नीति 2020 बच्चे के संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक और शारिरिक कौशल के विकास पर ध्यान देने के साथ प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा की आवश्यकता पर जोर देती है।

2. स्कूली शिक्षा: नीति का उद्देश्य एक समग्र और बहु-विषयक शिक्षा प्रदान करके तथा पाठ्यचर्या की सामग्री की मुख्य अवधारणाओं तक कम करके, अनुभवात्मक शिक्षा को बढ़ावा देकर, और शिक्षण और सीखने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करके स्कूली शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन लाना है।

3. उच्चतर शिक्षा: एनईपी 2020 का उद्देश्य उच्च शिक्षा को अधिक बहुआयामी, लचीला और 21वीं सदी की जरूरतों के अनुसार प्रासंगिक बनाना है। यह कई निकास विकल्पों के साथ चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रम और विश्वविद्यालयों में प्रवेश के लिए एक सामान्य प्रवेश परीक्षा शुरू करने का भी प्रस्ताव करती है।

4. व्यावसायिक शिक्षा: नीति व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास की आवश्यकता पर जोर देती प्रतीत होती है, जिसमें युवाओं को कार्यकुशल और नौकरी के लिए तैयार कार्यबल बनाने पर ध्यान दिया गया है।

5. शिक्षक शिक्षा: एनईपी 2020 में चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम शुरुआत करके शिक्षक शिक्षा प्रणाली में सुधार करने का प्रस्ताव प्रेषित है। कार्यक्रम, प्रशिक्षण के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग में वृद्धि, और निरंतर व्यावसायिक विकास को बढ़ावा देना सम्मिलित है ।

6. जनजातीय भाषाओं और परंपराओं का संरक्षण और संवर्धन: एनईपी 2020 भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और संवर्धन बल दे रही है । भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 आदिवासी भाषाओं और परंपराओं को संरक्षित करने और बढ़ावा देने को महत्त्व दे रही है। निति आलेख के अनुसार, भारत में भाषाओं और संस्कृतियों की विविधता भारत की एक ताकत है और इसे संरक्षित और पोषित किया जाना चाहिए। शिक्षा के माध्यम से इन भाषाओँ एवं परम्पराओ के सरंक्षण एवं संवर्धन हेतु प्रयास करने पर बल भी दिया गया है

राष्ट्रिय शिक्षा निति 2020 में कहा गया है कि शिक्षा प्रणाली समावेशी होनी चाहिए और बहुभाषावाद को बढ़ावा देना चाहिए। यह आदिवासी भाषाओं सहित स्थानीय भाषाओं को पाठ्यक्रम में एकीकृत करने और शिक्षण और सीखने में उनके उपयोग को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल देता है। नीति आदिवासी समुदायों की मौखिक परंपराओं और सांस्कृतिक प्रथाओं के महत्व को भी पहचानती है और पाठ्यक्रम में उनके समावेश को प्रोत्साहित करती है।

इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, एनईपी 2020 आदिवासी भाषाओं सहित स्थानीय भाषाओं को पढ़ाने और सीखने के लिए भाषा प्रयोगशालाओं की स्थापना और डिजिटल संसाधनों के विकास की बात करता है। यह द्विभाषी और बहुभाषी पाठ्यपुस्तकों के निर्माण और पाठ्यपुस्तकों में स्थानीय ज्ञान सामग्री को शामिल करने की भी सिफारिश करता है। इन उपायों के अलावा, एनईपी 2020 आदिवासी भाषाओं और संस्कृतियों के संरक्षण और प्रचार के लिए विशेष संस्थानों की स्थापना की भी सिफारिश करता है। ये संस्थान अनुसंधान करेंगे, पाठ्यचर्या सामग्री विकसित करेंगे, और शिक्षकों तथा अन्य हितधारकों को प्रशिक्षण प्रदान करेंगे।

स्वदेशी भाषाओं में व्यावसायिक डिग्री

बहुभाषावाद को बढ़ावा देना और भारतीय भाषाओं में व्यावसायिक/पेशेवर डिग्री प्रदान करना इस नीति के दो सबसे महत्वपूर्ण घटक हैं। एनईपी 2020 मुफ्त ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफार्मों के माध्यम से शीर्ष स्तर की विशेष जानकारी को सुलभ बनाने के महत्व को रेखांकित करती है ताकि शिक्षण सामग्री की उपलब्धता बढ़ सके, और शिक्षा के सभी स्तरों पर और विभिन्न भारतीय भाषाओं में अंतर्राष्ट्रीय ज्ञान स्रोत उपलब्ध हों । इसके बाद इन संसाधनों को एक ही रिपॉजिटरी में उपलब्ध कराया जाएगा। इस रिपॉजिटरी को स्थापित किया जाना है ताकि कोई भी प्रासंगिक सामग्रियों को आसानी से खोज और डाउनलोड कर सके।

स्वदेशी लोकाचार और संस्कृति से समृद्ध शिक्षा का सार्वभौमिकरण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति पूरे देश में विशेष शिक्षा क्षेत्रों की स्थापना की बात करती है, जो कि पिछड़े एवं दूरस्थ क्षेत्रों में स्थापित किए जाएंगे। यह अच्छी तरह से माना जाता है कि भारत में विभिन्न क्षेत्रों के बीच विकास में असमानताएं हैं, यहां तक कि उन राज्यों के भीतर भी जो समग्र रूप से मानव विकास के दृष्टिकोण से देश में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। उपलब्ध आंकड़ों से पता चलता है कि कुछ भौगोलिक स्थानों में कम प्रतिनिधित्व वाले समूहों के छात्रों का प्रतिशत काफी अधिक है। राज्य सरकारों द्वारा इन क्षेत्रों में खर्च किए जाने वाले प्रत्येक रुपये के लिए, केंद्र सरकार 2:1 के अनुपात में निवेश और प्रति-बच्चे के खर्च का वित्तपोषण करेगी। इन अतिरिक्त निधियों का उपयोग नीति के निष्पादन सहित विभिन्न नए कार्यों के लिए किया जाएगा, जो संभवतः इन क्षेत्रों में शैक्षिक प्रदर्शन में सुधार के लिए आवश्यक हैं।

कुल मिलाकर, एनईपी 2020 का उद्देश्य भारत की शिक्षा प्रणाली को 21वीं सदी की जरूरतों के लिए अधिक समावेशी, समग्र और प्रासंगिक बनाने के लिए वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में आवश्यक परिवर्तन करना है।

पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के क्षेत्र में अनुसंधान अध्ययन का एक बढ़ता हुआ क्षेत्र है, जिसमें कई शोधकर्ता पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों की प्रभावकारिता, सुरक्षा और कार्यप्रणाली को समझने के लिए प्रयासरत है ।

इस क्षेत्र में शोध क्षेत्र के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

1. **लोकवनस्पतिविज्ञान:** लोकवनस्पतिविज्ञान स्वदेशी लोगों द्वारा पौधों के पारंपरिक उपयोग का अध्ययन है। इस क्षेत्र के शोधकर्ता पौधों के पारंपरिक उपयोगों, उनके रासायनिक घटकों और शरीर पर उनके प्रभावों पर आंकड़े एकत्र करते हैं और उनका विश्लेषण करते हैं।

2. **नृवंशविज्ञान:** नृवंशविज्ञान स्वदेशी लोगों द्वारा दवाओं के पारंपरिक उपयोग का अध्ययन है। इस क्षेत्र के शोधकर्ता पारंपरिक दवाओं के औषधीय गुणों की जांच करते हैं और उनके चिकित्सीय प्रभावों के लिए जिम्मेदार सक्रिय यौगिकों की पहचान करने का प्रयास करते हैं।

3. **क्लिनिकल परीक्षण**: क्लिनिकल परीक्षण ऐसे अध्ययन हैं जो नए उपचारों की सुरक्षा और प्रभावकारिता का परीक्षण करते हैं। शोधकर्ता एक्यूपंक्चर, हर्बल उपचार और मन-शरीर चिकित्सा जैसे पारंपरिक उपचार पद्धतियों की सुरक्षा और प्रभावकारिता का परीक्षण करने के लिए नैदानिक परीक्षण कर रहे हैं।

4. **तुलनात्मक प्रभावशीलता अनुसंधान:** तुलनात्मक प्रभावशीलता अनुसंधान एक ही स्थिति के लिए विभिन्न उपचारों की प्रभावशीलता की तुलना करता है। इस क्षेत्र के शोधकर्ता विभिन्न प्रकार की स्थितियों, जैसे कि पुराने दर्द, चिंता और अवसाद के लिए पारंपरिक उपचार पद्धतियों की प्रभावशीलता की तुलना पारंपरिक उपचारों से कर रहे हैं।

5. **स्वास्थ्य सेवा अनुसंधान:** स्वास्थ्य सेवा अनुसंधान स्वास्थ्य सेवाओं के वितरण और संगठन की जांच करता है। इस क्षेत्र के शोधकर्ता अध्ययन कर रहे हैं कि अधिक समग्र और रोगी-केंद्रित देखभाल प्रदान करने के लिए पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों को पारंपरिक स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों में कैसे एकीकृत किया जा सकता है। इन प्रथाओं के संभावित लाभों और सीमाओं को समझने और स्वास्थ्य देखभाल नीति और अभ्यास को सूचित करने के लिए पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के क्षेत्र में अनुसंधान महत्वपूर्ण है। हालांकि, उचित पद्धतियों का उपयोग करके कठोर शोध करना और उन सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों को पहचानना महत्वपूर्ण है जिनमें ये प्रथाएं विकसित हुईं।

हिमाचल में विभिन्न उपचार पद्धतियां

उत्तरी भारत में स्थित हिमाचल प्रदेश, विभिन्न स्वदेशी समुदायों का घर है, जिन्होंने पीढ़ि दर पीढ़ी अपनी पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों का विकास किया है। पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों ने हिमाचल प्रदेश में स्थानीय समुदायों की स्वास्थ्य देखभाल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, और बहुत से लोग आज भी उन पर भरोसा करते हैं। हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि इनमें से कुछ अभ्यास वैज्ञानिक रूप से प्रभावी साबित नहीं हो सकते हैं, और किसी भी नए उपचार की कोशिश करने से पहले एक योग्य स्वास्थ्य चिकित्सक से परामर्श करने की हमेशा सलाह दी जाती है। इसके पीछे का कारण संभवतः प्रचार प्रसार एवं प्रशिक्षण की कमी हो सकती है । वर्तमान समय में पारम्परिक तरीको से इलाज करने वाले वैध मुख्यतः विभिन्न प्रकार की जड़ी बूटियों के गुणों का ज्ञान रखते है , परन्तु यह ज्ञान किसी रूप में कंही लिखित नहीं है । राष्ट्रिय शिक्षा निति अवश्य इस क्षेत्र में उपयोगी सिद्ध होगी, और समय रहते पारम्परिक ज्ञान और देसी चिकित्सा पद्धतियों का सरंक्षण एवं सम्बर्धन संभव हो सकेगा ।

हिमालयन हीलर प्रसिद्ध पारंपरिक चिकित्सक वो चिकित्स्क हैं जो हिमालयी क्षेत्र में रहते हैं और विभिन्न प्रकार की बीमारियों के इलाज के लिए विभिन्न देसी जड़ी बूटियों पर आधारित चिकित्सा पद्धतियों का उपयोग करते हैं। ये चिकित्सक अक्सर अपने समुदायों के सम्मानित सदस्य होते हैं और स्थानीय लोगों को स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मुख्यः रूप से पारम्परिक चिकित्सा की तकनीकों से इलाज करने वाले लोगो में निम्न लोग आते है :

1. आमची: आमची मुख्यः रूप से पारंपरिक तिब्बती चिकित्सक हैं जो तिब्बती चिकित्सा की पारंपरिक प्रणाली सोवा-रिग्पा का अभ्यास करते हैं। आमची विभिन्न प्रकार की बीमारियों, जैसे पाचन विकार, श्वसन समस्याओं और तंत्रिका संबंधी विकारों के इलाज के लिए जड़ी-बूटियों, खनिजों और पशु उत्पादों जैसे प्राकृतिक उपचारों का उपयोग करती है।

2. झाकड़ी (चेले या पुजारी): झाकड़ी पारंपरिक चिकित्सक हैं जो शमनवाद का अभ्यास करते हैं, एक आध्यात्मिक अभ्यास जिसमें बीमारों को ठीक करने के लिए आत्मा की दुनिया के साथ संवाद करना शामिल है।

3. चिकित्सक: चिकित्सक पारंपरिक चिकित्सक हैं जो यूनानी चिकित्सा पद्धति का अभ्यास करते हैं, जो कि प्राचीन ग्रीस में उत्पन्न हुई और इस्लामी काल के दौरान भारत में लाई गई चिकित्सा की एक प्रणाली है। चिकित्सक विभिन्न प्रकार की

बीमारियों, जैसे गठिया, मधुमेह और श्वसन संबंधी विकारों के इलाज के लिए जड़ी-बूटियों, पशु उत्पादों और खनिजों जैसे प्राकृतिक उपचारों का उपयोग करते हैं।

4. नाई: नाई पारंपरिक चिकित्सक हैं जो हड्डी सेटिंग और मालिश चिकित्सा में विशेषज्ञ हैं। वे दर्द से छुटकारा पाने और गतिशीलता बहाल करने के लिए शरीर की हड्डियों और मांसपेशियों में हेरफेर करने के लिए विभिन्न तकनीकों का उपयोग करते हैं।

उपरोक्त देसी चिकित्स्कों द्वारा की जाने वाली कार्यप्रणाली सिर्फ वर्तमान में मौजूद ऐसे कुछ ही लोगो तक सिमित है तथा नयी पीढ़ी इसमें कोई रूचि नहीं दिखा रही है। अतः आवश्यकता है की इस बहुमूल्य प्रणाली का सरंक्षण एवं सम्बर्धन हो तथा इन लोगो को भी उचित लाभ प्राप्त हो। हिमालयी चिकित्सक इस क्षेत्र में स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, और उनकी उपचार पद्धतियां पीढ़ियों से चली आ रही हैं। हालांकि इनमें से कुछ प्रथाएं वैज्ञानिक रूप से प्रभावी साबित नहीं हुई हैं, स्थानीय लोगों द्वारा उन्हें अक्सर महत्व दिया जाता है और समुदाय के स्वास्थ्य और कल्याण को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। निष्कर्ष रूप में प्रेषित किया जा सकता है की राष्ट्रिय शिक्षा निति भारतीय पारंरिक ज्ञान क सम्बर्धन एवं सरंक्षण में अहम् भूमिका निभाने में योगदान करेगी। साथ ही स्थानीय लोगो को उनके परम्परागत पेशे को रोजगार में बदलने में आसानी होगी। वर्तमान में आवश्यकता है तो सिर्फ निति के सही तरिके से लागू करने की ताकि निति का सही लाभ लोगो को प्राप्त हो सके |

निष्कर्ष: वर्तमान राष्ट्रिय शिक्षा निति, गत शिक्षा व्यवस्था में सुधार को नयी दिशा प्रदान करती है | भारतीय समाज की सांस्कृतिक धरोहरे अभी पूरी तरह सरंक्षित नही हो पायी है | भरमौर के गद्दी समुदाय की परम्परागत इलाज की तकनीके इसका एक उदाहरण है जो आज तक कंही भी किसी भी रूप में सरंक्षित नही है, तथा लुप्त होने की कागार पर है | भारतीय राष्ट्रिय शिक्षा निति 2020 इन सरंक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति की ओर एक व्यापक प्रयास है | बस आवश्यकता है निति के सही तरीके से लागू करने की ताकि समयानुसार विलुप्त होती देसी इलाज की पद्धतियों का सरंक्षण एवं संबर्धन हो सकें तथा समाज लाभान्बित हो सकें |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

- शर्मा, ए., और पाठक, आर.के. (2018)। हिमाचल प्रदेश की जनजातीय आबादी द्वारा उपयोग की जाने वाली पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली। सामाजिक विज्ञान और मानविकी में एशियन जर्नल ऑफ रिसर्च, 8(2), 75-8 **https://www.indianjournals.com/ijor.aspx?target=ijor:ajrssh&volume=8&issue=2&article=008**
- **https://www.education.gov.in/shikshakparv/docs/Stimulating%20Indian%20knowledge%20system.pdf**
- **https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf**